जापान भारती

संपादक

सौरभ सिंघल

संपादक मंडल

अखिल मित्तल

রঞ্জন গুপ্ত (रंजन गुप्त)

रंजन कुमार

सुशील कुमार जैन

पता

208, मैंशन न्यू ताकानावा

2-10-15 ताकानावा

मिनातो कू

तोक्यो 108

फोन/ई-मेल

सौरभ : 03-3462-0853

singals@ml.com

रंजन कुमार : 03-3473-6043

ranjan@twics.com

फैक्स

सुशील : 03-3832-1641

अंक ५ विक्रम संवत् २०५२ जुलाई १९९५

इस अंक में

हमारा पन्ना

आपका पन्ना

विचार

आजकल

प्रसंग

व्यंग्य

संस्कृति

काव्यधारा

बचपन

कला

निवेदन

कविता

प्रबन्ध

रान्ना

हमारा पन्ना

आप सब से मिला स्नेह-समर्थन हमारे लिए बहुत उत्साहजनक है। मिताका स्थित एशिया अफ्रीका भाषा विद्यापीठ से श्री योइचि युकिशिता लिखते हैं कि इस विद्यापीठ में विश्वविद्यालय के स्तर पर दो वर्ष एशिया अफ्रीका की भाषाएँ पढ़ाई जाती हैं, जिन में हिंदी भी है । इस पाठ्यक्रम के अतिरिक्त शाम और शनिवार को कई कक्षाएँ भी चलती हैं । युकिशिता जी स्वयं तो भारती के लिए लिखेंगे ही, अपने छात्रों से भी लिखवाने का प्रयत्न करेंगे।

हिरोको नागासाकी का पत्र पा कर ये विश्वास होने लगा है कि जापानी पाठक भी रुचि ले रहे हैं ।

अब तक हिंदी, संस्कृत, बंगला, तमिल और मराठी में हम-आप अपनी बात एक दूसरे से कह चुके हैं । इस अंक में राजस्थानी बात भारती के पन्नों को सुशोभित कर रही है ।

गुरु का हमारे जीवन-मूल्यों में विशेष महत्त्व है । इसी विषय पर स्कंदपुराण के कुछ श्लोक मूल संस्कृत में हिंदी अनुवाद सहित प्रस्तुत हैं

- सौरभ सिंघल

आपका पन्ना

प्रिय सौरभ,

'जापान भारती' की प्रतियाँ मिली हैं । तुम इस प्रयास के लिए सचमुच बधाई के पात्र हो । रचनाएं एवं संपादकीय बड़े रोचक थे । मुझे आशा है कि तुम इसका प्रकाशन यथायोग्य जारी रखोगे । मुझे कई भाषाओं की सामग्री का एक पत्रिका में प्रकाशन का विचार पसंद आया । शायद इनके अनुवाद को शामिल करना अच्छा हो । मुझे यह पत्रिका अवश्य ही भेजते रहना । यदि मैं इस प्रयास में कोई सहायता कर पाया तो बड़ी खुशी होगी ।

तुम्हें यह जान कर खुशी होगी कि हमारे देश में प्रतिभाशाली स्कूली विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अनुसंधानों में रुचि को प्रोत्साहित एवं बरकरार रखने के लिए एक प्रयास किया जा रहा है । अन्ना विश्वविद्यालय, मद्रास में १२ से १७ वर्ष के स्कूली विद्यार्थियों को खुद ही चुने हुए प्रश्नों पर प्रयोग करने के अवसर दिए जाते हैं और प्रयोगशाला की सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं । इनमें से एक छात्र 'एड्स' पर प्रयोग कर रहा है । उसका मूल विचार यह है कि यदि 'सेलों' के कुछ विशेष गुणों को अपने 'मॉडल' के अनुसार नियंत्रित किया जा सके तो इस दिशा में महत्वपूर्ण विकास हो सकते हैं । दूसरे स्थानों पर भी ऐसी योजनाओं की बातें हो रही हैं ।

संपर्क बनाए रखना । शुभकामनाओं सहित,

प्रो. शचीन्द्र नाथ महेश्वरी, कम्प्यूटर विज्ञान विभाग,
आई. आई. टी., दिल्ली

मैंने अपने मित्र के घर पर आपकी ***'जापान भारती'*** पत्रिका पढ़ी । पढ़ कर बहुत खुशी हुई कि आप जापान में रह कर भी हिन्दी भाषा को बढ़ावा दे रहे हैं । इसके लिए हम सभी हिन्दुस्तानी भाइयों की तरफ से आपको शुभकामनाएं । एक तरफ हमारे हिन्दुस्तान में लोग हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी होने के बावजूद पश्चिमी देशों की ओर भाग रहे हैं । और दूसरी तरफ जापान जैसे व्यस्ततम देश में, जहाँ पर इंसान की जिन्दगी अपनी न हो कर मशीनी जिंदगी में तब्दील हो गई है, इंसान इस तरह की जिंदगी में और मायाजाल में फंस गया है, इस सबसे अलग हो कर आपने अपना कीमती समय निकाल कर हिन्दी को प्रोत्साहन दिया है, तथा हिन्दी संस्कृति को विदेश में जगाने की आशा की जो किरण दिखाई है उसके लिए आप बधाई के पात्र हैं ।

अशोक रावत, योकोहामा

'जापान भारती' का तीसरा अंक पा कर काफी प्रसन्नता हुई । आपके इस नेक काम के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। मुझे तो यह सोच कर ही गर्व होता है कि हमारे नजदीकी मित्र इस शुभ काम में तल्लीन हैं । हांलाकि मेरी अपनी शिक्षा दशम श्रेणी तक हिन्दी में हुई, लेकिन उस समय से आज तक (तकरीबन दस वर्ष) हिन्दी पढ़ने-पढ़ाने का अवसर न मिलने से जीवन में खालीपन महसूस होता था । आपका यह प्रयास इस खालीपन को दूर करने में सफल हुआ है।अंक तीन के सभी लेख काफी रोचक तथा ज्ञानवर्धक लगे । प्रोफेसर हरभजन सिंह पर लिखे गए सम्मान लेख से लगा कि पंजाबी साहित्य का भविष्य

काफी उज्जवल है । हरजेन्द्र चौधरी की रचना 'स्नोगेम्स' काफी रोचक थी, खासकर अंत तो यथार्थ के काफी नजदीक मालूम हुआ । हिन्दी कविता में हाइकू शैली का प्रयोग मेरे लिए नया था ।

हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के बारे में मेरा एक सुझाव है। कृपया लेख की भाषा का नाम हिन्दी में भी व्यक्त करें ।

अगर किसी भी प्रकार से इस महान कार्य में सहयोग कर सकूं तो भाग्यशाली समझूंगा । यहाँ क्लीवलैंड में हिंदी के विख्यात कवि श्री गुलाब खंडेलवाल जी का निवास है । मैं उनसे अपनी पत्रिका के लिए लिखने का आग्रह करूंगा ।

'जापान भारती' के चतुर्थ अंक की प्रतीक्षा में ।

संजय गुप्ता, क्लीवलैंड, ओहायो, अमरीका

'जापान भारती' के अंक मिले - श्री कोगाजी ने मेरे पास भिजवाया । जापान में हिंदी पत्रिका का प्रकाशन वास्तव में बड़ी बात है । इसके लिए आप साधुवाद के पात्र हैं । प्रकाशन योग्य लेखन मेरे पास हुआ तो उसे आपके अवलोकनार्थ अवश्य भेजूँगा । 'जापान भारती' निरंतर विकास करती रहे, आप स्वस्थ-सानंद रहें - यही हार्दिक कामना है ।

लक्ष्मीधर मालवीय

'जापान भारती' के अंक मिल रहे हैं । अत्यधिक प्रसन्नता है कि सुदूर देश में भी भारतीय संस्कृति की पहचान बनी हुई है । 'जापान भारती' इसके लिए सहयोग देती है, वह सराहनीय है । अच्छी बात है कि हिन्दी भाषा को सरल और सुबोध रखा गया है और विविधता लाने का प्रयास किया जा रहा है । पत्रिका अपने प्रारम्भिक रूप में भी मन को प्रसन्न और आकर्षित करती है ।

अधिकाधिक शुभकामनाएं !

विक्रम तिवारी, नौयडा

आशा है , आप लोग सानंद हैं । जापान भारती के प्रथम तीन अंक मुझे मिले । उनमें भारत और जापान के बारे में रोचक सामग्री पढ़कर मैं बहुत प्रसन्न हुई । मैं अगले अंक का इंतज़ार कर रही हूँ ।

शुभ कामनाओं सहित,

हिरोको नागासाकी

'जापान भारती' भेजने के लिए हार्दिक धन्यवाद । इसको देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई । जापान में बैठ कर हिंदी तथा भारतीय भाषाओं की सेवा करने वाले मित्रों को मेरा नमस्कार । आपका यह प्रयत्न सफल हो, व्यापक बने और सबल हो, यही कामना है । अगर समय निकाल पाया तो आपके लिए कुछ लिख कर भी भेजूंगा ।

डॉ. वेदप्रताप वैदिक, संपादक, पी. टी. आई. 'भाषा', नई दिल्ली

गुरु गीता
(श्री स्कंदपुराण)

अनन्याश्चिंतयन्तो ये सुलभं
परमं सुखम् ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गुरोरासाधनं
कुरु ।।

अनुवाद : जो व्यक्ति गुरु का चिन्तन अनन्य भाव से करते हैं, उन्हें परम सुख अर्थात् मोक्ष सुलभ हो जाता है । इसलिए सभी प्रकार के प्रयत्नों से गुरु की उपासना करनी चाहिए ।

नित्यं ब्रह्म निराकारं, निर्गुणं,
बोध्येत्परम्।
भायसन् ब्रह्मभावं यो दीपो
दीपान्तरं यथा ।।

अनुवाद : जो नित्य, निराकार, एवं निर्गुण परब्रह्म का बोध कराता है तथा जिस प्रकार एक दीपक अन्य दीपकों को प्रकाशित करता है उसी प्रकार अन्य लोगों के लिए जो ब्रह्म-भाव को प्रकाशित करता है, वह गुरु है ।

गुरुरादिरनादिश्च गुरुः परमदैवतम् ।
गुरुमन्त्रसमो नास्ति तस्मै
श्रीगुरवे नमः ।।

अनुवाद : गुरु आदि हैं, अनादि हैं; गुरु परम देवता हैं । गुरु से प्राप्त मंत्र (अथवा मंत्रणा) सदृश कोई अन्य मंत्र नहीं है । उन श्री गुरु को नमस्कार ।

चंद्रभूषण झा,
सेंट स्टीफ़न्स कॉलेज,
नई दिल्ली